|  |
| --- |
| 24. August 2025 |
| **21. Sonntag im Jahreskreis C** |
| Erste Lesung: Jes 66,18-21; Zweite Lesung: Hebr 12,5-7; Evangelium: Lk 13,22-30 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 145, 1+3 | Wohin soll ich mich wenden |
|  | GL 147 | Herr Jesu Christ, dich zu uns wend |
|  | GL 409, 1-3 | Singt dem Herrn ein neues Lied |
|  | GL 109 | Dieser Tag ist Christus eigen |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 153 | Herr, erbarme dich |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 167 | Dir, Gott, im Himmel |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Psalm 117, 1.2 |  |
|  | Kehrvers:  |  |
|  | GL 454 | Geht in alle Welt |
|  | oder |  |
|  | Psalmenlied: |  |
|  | GL 393, 1+2 | Nun lobet Gott im hohen Thron |
|  | oder |  |
|  | GL 386 | Laudate omnes gentes |
|  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 174, 8 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *So spricht der Herr:* |
|  | *Ich bin der Weg und die Wahrheit und das Leben.* |
|  | *Niemand kommt zum Vater außer durch mich.* |
|  |  |  |
| Credo: | GL 802 | Den Taufbund wir erneuern |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 485, 1+4+5 | O Jesu Christe, wahres Licht |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 200 | Heilig |
| Agnus Dei: | GL 803, 6 | Guter Hirt, der seine Herde |
|  |  |  |
| Danksagung:  | GL 411, 1+3! | Erde singe |
|  | GL 481, 1+2+4 | Sonne der Gerechtigkeit |
|  | GL 360, 1+3! | Macht weit die Pforten |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 395, 1-3 | Den Herren will ich loben |